ISSN: 2278-6236
Impact Factor: 7.624

राजनीति में युवाओं की भागीदारी : अवसर और चुनौतियाँ

Youth Participation in Politics: Opportunities and Challenges

Dr. Rajkumar Singh

डॉ. राजकुमार सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर - राजनीति विज्ञान

राजकीय महाविद्यालय आगरा कैंट,आगरा।

सारांश

भारत विश्व का सबसे युवा देश माना जाता है, जहाँ कुल जनसंख्या का लगभग 65 प्रतिशत भाग 35 वर्ष से कम आयु का है। यह विशाल युवा शक्ति देश के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विकास की दिशा निर्धारित करने की क्षमता रखती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में युवाओं की सक्रिय भागीदारी शासन प्रणाली को अधिक उत्तरदायी, पारदर्शी तथा जनोन्मुख बनाती है।

वर्तमान समय में युवा केवल मतदाता के रूप में ही नहीं बल्कि नीति-निर्माता, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिक विश्लेषक तथा डिजिटल अभियानकर्ता के रूप में भी उभर रहे हैं। सोशल मीडिया, शिक्षा के विस्तार, राजनीतिक जागरूकता तथा वैश्वीकरण ने युवाओं की राजनीतिक चेतना को सशक्त किया है।

हालाँकि, राजनीति में प्रवेश के दौरान युवाओं को अनुभव की कमी, आर्थिक संसाधनों का अभाव, राजनीतिक वंशवाद, अपराधीकरण तथा अवसरों की असमानता जैसी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह शोध पत्र भारतीय राजनीति में युवाओं की भूमिका, उपलब्ध अवसरों तथा प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा युवा सहभागिता को सुदृढ़ करने हेतु आवश्यक सुझाव प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: युवा शक्ति, लोकतंत्र, राजनीतिक भागीदारी, नेतृत्व, चुनौतियाँ, राजनीतिक जागरूकता

प्रस्तावना

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में नागरिकों की सक्रिय सहभागिता को सर्वोच्च महत्व दिया जाता है, क्योंकि लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति जनता की भागीदारी में निहित होती है। इस संदर्भ में युवा वर्ग किसी भी राष्ट्र की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति का प्रमुख आधार माना जाता है। युवा समाज का वह वर्ग है जो ऊर्जा, नवाचार, साहस, परिवर्तनशील सोच तथा भविष्य दृष्टि से परिपूर्ण होता है। अतः राजनीति में युवाओं की भागीदारी केवल प्रतिनिधित्व का प्रश्न नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण की अनिवार्य आवश्यकता है।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र होने के साथ-साथ सबसे अधिक युवा जनसंख्या वाला देश भी है। भारत की जनसांख्यिकीय संरचना (Demographic Structure) यह संकेत देती है कि आने वाले दशकों में देश के विकास की दिशा मुख्य रूप से युवाओं की राजनीतिक चेतना, नेतृत्व क्षमता और निर्णय प्रक्रिया में उनकी सहभागिता पर निर्भर करेगी। यदि इस विशाल युवा शक्ति को सकारात्मक राजनीतिक दिशा प्रदान की जाए, तो यह राष्ट्रीय विकास, सुशासन तथा सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन सकती है।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय राजनीति में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अनेक युवा नेताओं और छात्र संगठनों ने राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में अग्रणी भूमिका निभाई। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी विभिन्न सामाजिक आंदोलनों, लोकतांत्रिक सुधारों तथा जनआंदोलनों में युवाओं की सक्रिय उपस्थिति देखने को मिलती रही है। इससे स्पष्ट होता है कि राजनीतिक परिवर्तन और सामाजिक जागरण में युवा शक्ति सदैव प्रेरक तत्व रही है।

वर्तमान वैश्वीकरण एवं सूचना प्रौद्योगिकी के युग में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हुआ है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म तथा सूचना की सहज उपलब्धता ने युवाओं को राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक और सक्रिय बना दिया है। आज का युवा केवल मतदान

तक सीमित नहीं है, बल्कि नीति निर्माण पर विचार व्यक्त करने, जनमत तैयार करने, सामाजिक अभियानों का नेतृत्व करने तथा शासन की नीतियों की समीक्षा करने में भी भागीदारी निभा रहा है।

इसके अतिरिक्त शिक्षा के प्रसार, शहरीकरण, रोजगार संबंधी अपेक्षाओं तथा सामाजिक न्याय के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता ने युवाओं को राजनीतिक प्रक्रियाओं से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। युवा वर्ग पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, समान अवसर और विकासोन्मुख नीतियों की मांग कर रहा है, जिससे राजनीति में नई विचारधारा और आधुनिक दृष्टिकोण का समावेश हो रहा है।

हालाँकि, इन सकारात्मक परिवर्तनों के बावजूद राजनीति में युवाओं की वास्तविक भागीदारी अभी भी कई चुनौतियों से प्रभावित है। राजनीतिक वंशवाद, आर्थिक असमानता, अनुभव आधारित पूर्वाग्रह, अवसरों की कमी तथा राजनीति की नकारात्मक छवि युवाओं के राजनीतिक प्रवेश में बाधा उत्पन्न करती है। परिणामस्वरूप, देश की बड़ी युवा आबादी होने के बावजूद नीति निर्माण संस्थाओं में युवाओं का प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देता है।

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि राजनीति में युवाओं की भागीदारी के अवसरों, उनकी भूमिका तथा उनके समक्ष उपस्थित चुनौतियों का समग्र अध्ययन किया जाए। प्रस्तुत शोध पत्र इसी उद्देश्य से भारतीय राजनीति में युवाओं की सहभागिता के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करता है तथा लोकतांत्रिक प्रणाली को अधिक सहभागी एवं सशक्त बनाने में युवा शक्ति की संभावनाओं को रेखांकित करता है।

1. राजनीति में युवाओं की भागीदारी का महत्व

राजनीति में युवाओं की भागीदारी किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र की प्रगति और स्थिरता के लिए अत्यंत आवश्यक मानी जाती है। युवा वर्ग समाज का सबसे सक्रिय, ऊर्जावान तथा परिवर्तनशील वर्ग होता है, जो नई सोच, नवीन दृष्टिकोण और रचनात्मक विचारों के माध्यम से राजनीतिक व्यवस्था को गतिशील

बनाता है। लोकतंत्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि देश की युवा पीढ़ी शासन प्रक्रिया में कितनी सक्रिय रूप से भाग ले रही है।

युवा राजनीति में नवीन विचारधाराओं तथा आधुनिक मूल्यों को लेकर आते हैं, जिससे नीति निर्माण प्रक्रिया अधिक समकालीन और जनोन्मुख बनती है। बदलते सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश में शिक्षा, रोजगार, तकनीकी विकास, पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता, डिजिटल अधिकार तथा सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों को राजनीतिक विमर्श में प्रमुख स्थान दिलाने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। युवा नेतृत्व समाज की वास्तविक समस्याओं को समझकर व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है।

राजनीतिक सहभागिता युवाओं में नागरिक उत्तरदायित्व और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति जागरूकता विकसित करती है। जब युवा मतदान, जनचर्चा, राजनीतिक अभियानों तथा नीति निर्माण प्रक्रियाओं में भाग लेते हैं, तो उनमें राष्ट्रीय दायित्व की भावना सुदृढ़ होती है। इससे लोकतंत्र केवल शासन प्रणाली न रहकर जनसहभागिता आधारित व्यवस्था बन जाता है।

इसके अतिरिक्त, युवाओं की भागीदारी राजनीतिक संस्थाओं में पीढ़ीगत संतुलन स्थापित करती है। यदि राजनीति केवल वरिष्ठ नेतृत्व तक सीमित रह जाए, तो नीतियाँ बदलते समय की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं बन पातीं। युवा नेतृत्व नई तकनीकों, नवाचारों तथा आधुनिक प्रशासनिक तरीकों को अपनाने में अधिक सक्षम होता है, जिससे शासन प्रणाली अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनती है।

युवाओं की राजनीतिक सक्रियता सामाजिक परिवर्तन का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। इतिहास साक्षी है कि अनेक सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलनों में युवाओं ने अग्रणी भूमिका निभाई है। भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलनों, पर्यावरण संरक्षण अभियानों, मानवाधिकार आंदोलनों तथा लोकतांत्रिक सुधार प्रक्रियाओं में युवाओं की भागीदारी ने शासन व्यवस्था को सकारात्मक दिशा प्रदान की है।

वर्तमान डिजिटल युग में युवा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग करते हुए जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से युवा सरकार की नीतियों पर संवाद स्थापित कर रहे हैं तथा लोकतंत्र को अधिक पारदर्शी और सहभागी बना रहे हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि राजनीति में युवाओं की सक्रिय भागीदारी न केवल लोकतंत्र को सशक्त बनाती है, बल्कि राष्ट्र के दीर्घकालिक विकास, सामाजिक समरसता तथा सुशासन की स्थापना में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। युवा शक्ति को उचित दिशा और अवसर प्रदान करना किसी भी राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला है।

2. युवाओं के लिए उपलब्ध अवसर

वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देने हेतु अनेक नए अवसर विकसित हुए हैं। बदलते सामाजिक, तकनीकी तथा राजनीतिक परिवेश ने युवाओं को राजनीति से जुड़ने के लिए व्यापक मंच प्रदान किया है। आज का युवा पारंपरिक राजनीतिक प्रक्रियाओं के साथ-साथ आधुनिक माध्यमों के द्वारा भी राजनीतिक सहभागिता सुनिश्चित कर रहा है।

(i) लोकतांत्रिक अधिकारों एवं संवैधानिक प्रावधानों का विस्तार

भारतीय संविधान प्रत्येक नागरिक को समान राजनीतिक अधिकार प्रदान करता है। मतदान की आयु 18 वर्ष निर्धारित किए जाने से युवाओं को प्रारंभिक अवस्था में ही लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर प्राप्त होता है। इससे युवाओं में राजनीतिक जागरूकता, उत्तरदायित्व तथा राष्ट्रीय चेतना का विकास होता है।

युवा केवल मतदाता ही नहीं बल्कि चुनाव लड़ने, राजनीतिक दलों से जुड़ने तथा सार्वजनिक पदों पर कार्य करने के अवसर भी प्राप्त कर रहे हैं। पंचायत राज संस्थाओं एवं स्थानीय स्वशासन व्यवस्था ने ग्रामीण एवं शहरी युवाओं के लिए नेतृत्व के नए द्वार खोले हैं।

(ii) शिक्षा एवं राजनीतिक जागरूकता का विकास

शिक्षा के प्रसार ने युवाओं की राजनीतिक समझ को व्यापक बनाया है। विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा छात्र संगठनों के माध्यम से युवाओं को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं, प्रशासनिक संरचना तथा सार्वजनिक नीति की जानकारी प्राप्त होती है।

छात्र संघ चुनाव युवाओं के लिए राजनीतिक प्रशिक्षण का प्रारंभिक मंच सिद्ध होते हैं, जहाँ वे नेतृत्व, संवाद कौशल, संगठन क्षमता तथा निर्णय लेने की योग्यता विकसित करते हैं। राजनीतिक विज्ञान, लोक प्रशासन, समाजशास्त्र एवं विधि शिक्षा ने युवाओं को शासन व्यवस्था को समझने और उसमें सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया है।

(iii) डिजिटल मीडिया एवं सोशल मीडिया की भूमिका

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने राजनीति में युवाओं की भागीदारी को नई दिशा प्रदान की है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे डिजिटल नेटवर्क राजनीतिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन चुके हैं।

युवा ऑनलाइन अभियानों, जनमत निर्माण, सामाजिक आंदोलनों तथा नीति संबंधी चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से राजनीतिक जानकारी तक त्वरित पहुँच संभव हुई है, जिससे राजनीतिक जागरूकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

इसके अतिरिक्त, ई-गवर्नेंस एवं डिजिटल लोकतंत्र ने नागरिकों और सरकार के बीच प्रत्यक्ष संवाद स्थापित किया है, जिसमें युवा वर्ग सबसे अधिक सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

(iv) युवा नेतृत्व एवं सरकारी कार्यक्रम

भारत सरकार तथा विभिन्न संस्थाओं द्वारा युवाओं के राजनीतिक एवं सामाजिक नेतृत्व को विकसित करने हेतु अनेक कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। युवा संसद कार्यक्रम, राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS),

नेहरू युवा केंद्र संगठन, स्काउट-गाइड आंदोलन तथा विभिन्न नेतृत्व प्रशिक्षण योजनाएँ युवाओं को लोकतांत्रिक मूल्यों से परिचित कराती हैं।

इन कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं में नेतृत्व क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व, सामुदायिक सेवा भावना तथा नीति निर्माण की समझ विकसित होती है, जो भविष्य में राजनीतिक सहभागिता को मजबूत बनाती है।

(v) राजनीतिक दलों में युवा संगठनों की भूमिका

लगभग सभी प्रमुख राजनीतिक दलों ने अपने युवा संगठन स्थापित किए हैं, जो युवाओं को राजनीति में प्रवेश का अवसर प्रदान करते हैं। इन संगठनों के माध्यम से युवा राजनीतिक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं तथा जमीनी स्तर पर जनसंपर्क और संगठनात्मक कार्यों का अनुभव अर्जित करते हैं।

युवा प्रकोष्ठ राजनीतिक नेतृत्व की नई पीढ़ी तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और लोकतांत्रिक नेतृत्व के निरंतर विकास को सुनिश्चित करते हैं।

(vi) सामाजिक आंदोलनों एवं नागरिक सहभागिता के अवसर

वर्तमान समय में सामाजिक आंदोलनों, जनजागरूकता अभियानों तथा नागरिक संगठनों के माध्यम से भी युवाओं को राजनीति से जुड़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है। पर्यावरण संरक्षण, महिला अधिकार, शिक्षा सुधार, भ्रष्टाचार विरोध तथा मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर युवा सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

इन गतिविधियों के माध्यम से युवा प्रत्यक्ष राजनीति में प्रवेश से पूर्व सामाजिक नेतृत्व का अनुभव प्राप्त करते हैं।

3. राजनीति में युवाओं के समक्ष चुनौतियाँ

(i) राजनीतिक वंशवाद

भारतीय राजनीति में परिवारवाद के कारण नए युवाओं के लिए अवसर सीमित हो जाते हैं। कई बार योग्यता के स्थान पर पारिवारिक पृष्ठभूमि को प्राथमिकता दी जाती है।

(ii) आर्थिक संसाधनों की कमी

चुनाव प्रक्रिया अत्यधिक खर्चीली होने के कारण सामान्य पृष्ठभूमि के युवा राजनीति में प्रवेश करने से वंचित रह जाते हैं।

(iii) अनुभव की कमी

युवाओं को अक्सर अनुभवहीन मानकर महत्वपूर्ण राजनीतिक जिम्मेदारियाँ नहीं दी जातीं, जिससे उनकी क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता।

(iv) राजनीति का अपराधीकरण

राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण और नकारात्मक छवि के कारण कई शिक्षित युवा राजनीति से दूरी बनाए रखते हैं।

(v) राजनीतिक उदासीनता

कुछ युवाओं में राजनीति के प्रति निराशा एवं अविश्वास की भावना भी भागीदारी को सीमित करती है।

4. लोकतंत्र को सशक्त बनाने में युवाओं की भूमिका

युवा पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलनों, सामाजिक न्याय अभियानों तथा नीति सुधार प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी निभा सकते हैं।

युवा तकनीकी नवाचारों के माध्यम से ई-गवर्नेंस, डिजिटल लोकतंत्र और नागरिक सहभागिता को मजबूत बना रहे हैं। इससे शासन और नागरिकों के बीच संवाद अधिक प्रभावी हुआ है।

5. युवा राजनीतिक सहभागिता को बढ़ाने के उपाय

- राजनीतिक शिक्षा को विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर बढ़ावा दिया जाए।
- राजनीतिक दलों में युवाओं को नेतृत्व पद प्रदान किए जाएँ।
- चुनावी प्रक्रिया को कम खर्चीला बनाया जाए।
- युवा नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार किया जाए।
- राजनीति में नैतिक मूल्यों एवं पारदर्शिता को बढ़ावा दिया जाए।

निष्कर्ष

राजनीति में युवाओं की भागीदारी लोकतंत्र की मजबूती और राष्ट्र निर्माण के लिए अनिवार्य है। युवा नई ऊर्जा, नवाचार और परिवर्तन की भावना लेकर राजनीतिक व्यवस्था को अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

हालाँकि अवसरों की उपलब्धता के बावजूद संरचनात्मक एवं सामाजिक चुनौतियाँ उनकी सक्रिय भागीदारी में बाधा उत्पन्न करती हैं। यदि सरकार, राजनीतिक दल और शैक्षणिक संस्थान मिलकर युवाओं को समान अवसर प्रदान करें, तो भारतीय लोकतंत्र अधिक समावेशी, गतिशील और भविष्य उन्मुख बन सकता है।

इस प्रकार, युवाओं की सक्रिय राजनीतिक भागीदारी न केवल लोकतंत्र को सुदृढ़ करेगी बल्कि भारत के सतत एवं समग्र विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेगी।

संदर्भ सूची

1. कश्यप, सुभाष सी. (2019). *भारतीय राजनीति और संविधान*. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।

2. सिंह, एम. पी., एवं सिंह, रेखा. (2018). *भारतीय राजनीतिक व्यवस्था*. नई दिल्ली: पियर्सन प्रकाशन।

3. शर्मा, आर. सी. (2016). *भारतीय शासन और राजनीति.* जयपुर: रावत प्रकाशन।

4. वर्मा, एस. पी. (2015). *आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

5. यादव, बी. डी. (2020). *भारतीय लोकतंत्र और राजनीतिक प्रक्रिया.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

6. मिश्रा, के. के. (2017). *भारतीय राजनीति के समकालीन मुद्दे.* नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।

7. कुमार, सुरेन्द्र. (2014). *राजनीति विज्ञान के सिद्धांत.* आगरा: साहित्य भवन प्रकाशन।

8. चौधरी, आर. एस. (2021). *भारतीय लोकतंत्र : संरचना और कार्यप्रणाली.* जयपुर: पॉइंटर पब्लिशर्स।

9. तिवारी, आर. सी. (2016). *लोक प्रशासन एवं भारतीय शासन व्यवस्था.* आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन।

10. जोशी, वी. के. (2013). *राजनीतिक समाजीकरण और सहभागिता.* नई दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय।

11. पंत, पुष्पेश. (2012). *भारतीय राजनीति के आयाम.* नई दिल्ली: मैकग्रॉ हिल एजुकेशन।

12. भारत सरकार, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय. (2022). *राष्ट्रीय युवा नीति.* नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन।

13. भारत सरकार, निर्वाचन आयोग. (2023). *भारत में मतदाता सहभागिता रिपोर्ट.* नई दिल्ली: निर्वाचन आयोग।

14. सिंह, राजेश कुमार. (2019). *लोकतंत्र और युवा नेतृत्व.* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।

15. गुप्ता, एस. एल. (2018). *भारतीय लोकतंत्र में नागरिक सहभागिता.* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।